क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल , देहरादून

अंक: १ : मई २०२२

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठकगण ,

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। इसके बिना मनुष्य पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। सुख-दुख, मिलना-बिछड़ना, संयोग-वियोग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हमें उन्मुक्त भाव से मुस्कुराते हुए जीवन के दोनों पक्षों का स्वागत करने को तैयार रहना चाहिए। संसार रूपी यात्रा के हम सब पथिक ही तो हैं और निरंतर अपना पथ खोज रहे हैं। कब कौन मिल जाए कुछ पता नहीं किन्तु यह आवश्यक तो नहीं सबकी मंज़िल एक हो, सबका मार्ग एक हो। हमें यह समझना ही होगा कि यदि किसी का जीवन में आना तय है तो उसका विदा होना भी उतना ही ज़रूरी है। दोनों ही ऐसी अनुभूतियाँ हैं जिन्हें अनुभव करना आवश्यक है। नए रिश्ते बनाना, उन रिश्तों से नित नवीन बातें सीखना और उनको कुछ सिखाना, यही तो होती है जीवन यात्रा ,जो इस जीवन को सार्थक करती है ।

आपकी उपलब्धियाँ जीवन को सफल नहीं बनाती बल्कि आपके रिश्ते जो आपने उन उपलब्धियों को प्राप्त करके बनाये, वे ही मायने रखते हैं । उनसे दूर होना ही उनकी स्मृतियों को सँजोकर रखना सिखाता है। कभी- कभी तो रिश्तों की अहमियत भी उनके दूर जाने पर ही समझ में आती हैं। मिलना- बिछड़ना सब भाग्य का खेल है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति हमारे जीवन में किसी उद्देश्य से ही आता हैं।कोई सीख देने, कोई दुख में साथ देने तो फिर कोई आँखें खोलने।कभी-कभी हमें भी दूसरों से विदा लेनी होती है। यहाँ पर हम सभी को एक बात याद रखनी हैं कि आगे कई अनजान लोग जीवन के सफर में फिर हमसे जुड़ने वाले हैं। कई पल होंगे जो स्मृतियों पर एक अमिट छाप छोड़ेंगे। तो चलें क्यों न आगे बढ़ चलें। क्या पता कल फिर किसी अनजान रास्ते के मोड़ पर हम टकरा जाएँ ।

इस अंक के माध्यम से मैं वैल्हम परिवार से जुड़े नए सदस्यों का स्वागत करती हूँ और जिन्होंने हमसे विदा ली है उन सभी का हमारे जीवन को आलोकित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ । वर्ष 2022 के 'क्षितिज' के इस अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस से भी अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि हिन्दी भाषा के प्रति हम सभी वैल्हमाइट्स की रुचि में निरंतर वृद्धि हो रही है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी हम हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अपनी रुचि बनाए रखेंगे और निरंतर हिन्दी भाषा का संवर्धन करेंगे।

मनस्वी पंत

इस अंक में आगे...

पृष्ठ 1 संपादिका की कलम से
पृष्ठ 2 सौंदर्य, गुमनाम पहचान , तुम्हारी शुभ चिंतक
पृष्ठ 3 पंख फैलाओ छू लो आसमाँ, अजब देश की गजब बातें
पृष्ठ 4 पुण्यतिथि विशेष
पृष्ठ 5 हँसना जरूरी है
पृष्ठ 6 तू सब सहती है , चुनाव का भाव
पृष्ठ 7 जारी रहेगा सफर
पृष्ठ 8 अच्छा तो हम चलते हैं
पृष्ठ 9 प्रगति की राह पर
पृष्ठ10 वैल्हमाइट्स का राशि-फन
पृष्ठ 11 घूमता आईना
पृष्ठ 12 डरना मना है
पृष्ठ 13 शब्दहार
पृष्ठ14 जीते हैं चल
पृष्ठ 15 टेलीफोन
पृष्ठ 16 एकजुटता का संदेश

सौंदर्य

आजकल के तेज़-रफ्तार से भागने वाले जीवन में, हम न जाने कब, अपने आस-पास की छोटी-से-छोटी चीजों के सौन्दर्य को परखना भूल चुके हैं| ऐसी कितनी बातें हैं जो हमारे हृदय को स्पर्श करती चली जाती हैं, पर हम उसे उतना समय ही नहीं दे पाते और न ही उसका सही मायनों में अर्थ समझ पाते हैं|

दिसंबर की एक सुंदर संध्या , आँगन में शांत बैठे, छत की जाली के परे, एक टूटता तारा नज़र आया, तो मस्तिष्क में कुछ विचारों की एक लहर-सी उठ पड़ी| कितना सुंदर दृश्य था ! तारे स्वयं जल कर, हमें मधुरता का अनुभव दे रहे थे ! फिर, चमकते हुए तारों की चादर को नील गगन में बिछे हुए देख आभास हुआ कि वे भी, नित्य रूप से टिमटिमाकर अपने अस्तित्व का सम्मान कर रहे थे| इस तथ्य में ही कितनी सुंदरता थी| यदि मैं सोचने बैठूँ तो ऐसे कितने ही कार्य हैं जो हमारी दृष्टि में छोटे हैं, किन्तु करने वाले की दृष्टि से देखा जाये तो एक-मात्र केवल प्रेम और सौन्दर्य का ही आभास होगा । सर्दियों में माँ का अपना शाल उढ़ाना| दोपहर में छत पर, अधखिली धूप में, दादी के साथ बैठकर संतरे और अमरूद काटना| बिन कहे , अपने छोटे भाई के लिए चाय बनाना| पापा का जानबूझकर शतरंज के खेल में हार जाना| दफ्तर से घर आते समय, दादू का मेरा प्रिय मिष्ठान्न , घर लाना| ऐसी कितनी बातें हैं जिन्हें हम तुच्छ समझकर, छोड़ देते हैं| न जाने हम कब समझेंगे कि समय रेत की तरह हमारी मुट्ठी से निकल जाएगा और बचेंगी तो सिर्फ वे स्मृतियाँ जिनके लिए हम हृदय से आभारी हैं|

देविका अग्रवाल
कक्षा 12

जीते हैं चल

सुनो सुनो दुनियावालो ,
जरा नज़र तो घुमा लो ।

आई थी कोविड की बीमारी ,
मचाई थी हर कोने में उसने तबाही ।

चाहे हो बच्चों की पढ़ाई ,
या हो कपड़ों की सिलाई।

रोका था इसने कार्यालयों का काम ,
बढ़ाया था इसने दिन में आराम।

हो गया है अब काफी समय खराब ,
तो चलो लाएँ जग में नया बदलाव।

न होंगे अब विद्यालय बंद ,
ऑनलाइन की कक्षा बंद ।

चलो करे हम अभियान शुरू ,
कोविड से आज़ादी पाएँगे ज़रूर,
फिर से जीवन जियेंगे ज़रूर।

मान्या गुप्ता एवं परन्या दुआ
कक्षा 9

परछाई

जिससे मैं भाग रही हूँ,
वह है मेरी परछाई।

बचपन ही था अच्छा,
भले ही थे अल्पज्ञानी।
बस एक चॉकलेट ,
और छूमंतर सारी परेशानी।
अब समझा है दुनिया को,
भूलकर अपना बचपन।
जब चाह थी मोह माया को पाने की
जो कभी था ही नहीं सत्य
उसे भी सच मान बैठे हैं ।
समतल धरती पर चलकर भी ,
खुद को गिरा बैठे हैं।
पत्थरों की ठोकरों को ,
चुनौतियाँ समझ बैठे हैं ।
आज फिर उसी मोड़ पर ज़िन्दगी ले
आई ,
एक तरफ था कुआँ और एक तरफ थी
खाई पर सच तो यह था ,
कुँए में कभी पानी न था,
और बिन गहराई की थी वह खाई।
भय तो मन में था ,कौन जानता था
जिससे मैं भाग रही हूँ ,
वह है मेरी परछाई।

श्रीना गुलाटी
कक्षा १०

पंख फैलाओ छू लो आसमाँ ...

मनुष्य भले ही अपने जीवन में कितना ही समस्याग्रस्त क्यों न हो, उसके जीवन में कितनी ही पीड़ा क्यों ना हो लेकिन वह उड़ने के लिए ही बना है। नेपोलियन ने कहा था "जब तक आप अपने पंख नहीं फैलाओगे, तब तक आप यह नहीं जान पाओगे कि आप कितना ऊँचा उड़ सकते हो।"

जब हम अपने जीवन में संघर्षों का सामना करते हैं, उस समय हमें केवल अपने पंख़ों को फैलाने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी तो जीवन भी हमारी परीक्षा ले रहा होता है। हम अपने जीवन की समस्याओं में घिरते ही चले जाते हैं। उन समस्याओं को हम या तो बोझ की तरह देख सकते हैं या चाहें तो उन्हें अपने लिए अवसर भी मान सकते हैं।

समय कभी हमारे पंख कतर भी देता है जिससे हम और संयत होकर अपने जीवन की कठिनाइयों से लड़ना सीख जाएँ।कई बार, हमारी समस्याओं को ही हमारे मार्गदर्शन का पथ बना देता है। हम मुश्किल समय में अपने लिए पंख खोज सकते हैं। एक बार जब हम उड़ना सीख जाते हैं, हमें हमेशा आसमान की ओर दृष्टि रखकर आगे बढ़ना चाहिए। ईश्वर ने हमें मुश्किल समय का सामना करने की शक्ति दी है।उदाहरणस्वरूप, दौड़ में भाग रहे प्रतिभागियों को बहुत सी बाधाओं का सामना करना होता है।अगर वे उन बाधाओं को पार करना नहीं सीखेंगे तो कभी उस दौड़ में जीत नहीं सकेंगे और स्वयं को सदैव पराजित ही देखेंगे ।

तो आओ आज जीवन को उत्साह और उमंग से जीने का प्रयास करके एक नए जीवन का आनंद लें और पंख फैला कर छू लें आसमान !

"**क्योंकि जब सोच बना ली है ऊँची उड़ान की ,**
फिर देखना व्यर्थ है ऊँचाई आसमान की।"

शौर्य अग्रवाल
कक्षा 9

अजब देश की गजब बातें

- नेपाल में कभी स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाया जाता है क्योंकि यह देश कभी किसी विदेशी शासन के अधीन नहीं रहा।
- भौगोलिक रूप से पाँच समय क्षेत्रों में फैले होने के बावजूद चीन का पूरा समय बीजिंग के अनुसार चलता है।
- न्यूज़ीलैंड 1893 में महिलाओं को वोट देने का अधिकार देने वाला पहला स्वशासी राष्ट्र था।
- चीन और रूस दोनों की सीमा 14 देशों से लगती है।

*इंटरनेट के सौजन्य से

पुण्यतिथि विशेष

एक पत्र मिस लिनेल के नाम...

प्रिय मिस लिनेल,
सादर नमन
आप कैसी हैं ? मैं उम्मीद करती हूँ कि आप अपने द्वारा बनाए गए इस शिक्षा के प्रांगण को देखकर प्रसन्न होंगी और हम सब विद्यार्थियों को अपना आशीष प्रदान करती रहेंगी।
मैं नविका आपके द्वारा निर्मित इस शिक्षण प्रांगण में शिक्षा प्राप्त करने वाली एक छोटी सी विद्यार्थी, आपका हृदय से धन्यवाद करना चाहती हूँ। इस विद्यालय में आने के पश्चात ही मुझे अपने जीवन में शिक्षा का महत्त्व समझ में आया। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि मैं इस प्रतिष्ठित विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर पा रही हूँ। आज वैल्हम गर्लस स्कूल स्वयं में एक ऐसा नाम बन गया है जहाँ आने की चाह अनेकों छात्राएँ अपने अभिभावकों के साथ देखती हैं। वे जानते हैं कि वैल्हम उनकी बेटियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार कर रहा है। यहाँ से जब वे बाहर कदम रखेंगी तो एक नए रूप में रखेंगी, ऐसा रूप जिसको पूरा समाज सराहेगा। हम लोग इस विद्यालय में गर्व से जीना सीखते हैं और अपने लिए इस जग में एक सम्मानजनक स्थान बनाने की दौड़ में अपने पहले कदम रखते हैं। इस विद्यालय ने मुझे एक नई उड़ान भरने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह विद्यालय हमारे लिए वह प्रकाश है जिसके सहारे हम नन्हें नादान बच्चे अपने सपनों के पथ पर चलने में सक्षम हैं ।
आज हर कोई महिला सशक्तिकरण से परिचित है और उसपर अमल भी करता है मगर जिस समय में आपने इस विद्यालय का निर्माण किया उस समय स्त्रियों की शिक्षा पर रोक लगा दी जाती थी उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं दिया जाता था पर आपने समाज को चुनौती दी और यह विद्यालय खोला जो आज भारत का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बन चुका है ।यह आपकी उत्तम सोच और बुलंद होंसलों का ही परिणाम है। आज मैं पूरे स्कूल की ओर से आपके समक्ष नतमस्तक हूँ। भावनाएँ तो बहुत हैं मन में व्यक्त करने के लिए लेकिन शब्दों के मोती नहीं मिल पा रहें हैं।हम कल जीवन में जितनी भी उड़ानें भरेंगे सब आप ही की भेंट होंगी। आशा करती हूँ कि आप हमारे जीवन के प्रत्येक उतार-चढ़ाव में हमारा सदैव मार्गदर्शन करती रहेंगी।
आपकी नविका।

नविका जिंदल
कक्षा 8

गुमनाम पहचान

गगन चूमती हुई ,
बिन पानी की लहरों में लहराती हुई ,
सूरज की चमचमाती किरणों में इतराती हुई ,
हरी पतंग ।

पर अफ़सोस
उसका इतराना एक दिखावा था ।
अपनी हरियाली पर अभिमान ,
आत्मसंतुष्टि का बहाना था ।
उसकी चंचल मुस्कान ,
गम छिपाने का ठिकाना था ।

लेकिन खुद उसने अपनी डोर को
उम्मीदों की जंजीरों में तब्दील कर दिया ।
नीले आसमान में नीला होने की चाह ने ,
उसकी हरियाली को बेरंग कर दिया ।

कुछ ऐसा ही है मानव आज का ,
जो डोर की उड़ान से ,
'अपनी' पहचान से ,
ऊँचाई के पैमाने से
नहीं है संतुष्ट !
और फँसा है अपनी और समाज की आशाओं के दरमियान ।
गया ज़माना परायों को सौंपने का जीवन की डोर ,
अब वह स्वयं बनाता है जीवन को ज़ंजीर की डोर ।
मूर्ख है वो , जो ऐसी आत्महत्या कर रहा है ,
स्वयं मरकर , दुनिया में प्रचार कर रहा है ।
मिटाकर अपनी पहचान ,
चाहता है देना , धरती को स्वर्ग का नाम ।

त्रिशा तिवारी
कक्षा ११

तुम्हारी शुभचिंतक

जब भी कभी मेरी याद सताए रोना नहीं,
क्योंकि सब हो जाएगा सही।
हमेशा मैं तुम्हारे साथ रहूंगी नहीं,
क्योंकि यही होगा तुम्हारे लिए सही।

तुम थी इस घर की परी,
न जाने कब हो गई बड़ी।
आज जो तुम हो अपने पैरो पर खड़ी,
इसके लिए तुम कितनी मुश्किलों से लड़ी।

नन्हें-नन्हें पैरों ने कब चलना सीखा,
इसी नरम आँचल में कब सिमटना सीखा।
जिस दिन मैंने तुम्हारा हाथ छोड़ा,
नए अंजान शहर में तुम ने आत्मनिर्भर होना सीखा।

जैसे बूँद -बूँद पानी से सागर बनते हैं,
वैसे माँ की ममता से बेटी के आँगन खिलते हैं।
जिस तरह कठिनाइयों के पीछे रास्ते खुलते हैं,
उसी तरह हर बेटी के पीछे माँ के सपने सँवरते हैं ।

जब भी कभी मेरी याद सताए रोना नहीं,
क्योंकि सब हो जाएगा सही,
हमेशा मैं तुम्हारे साथ रहूँगी नहीं,
क्योंकि यही होगा तुम्हारे लिए सही।

कशिश चौधरी
कक्षा ९

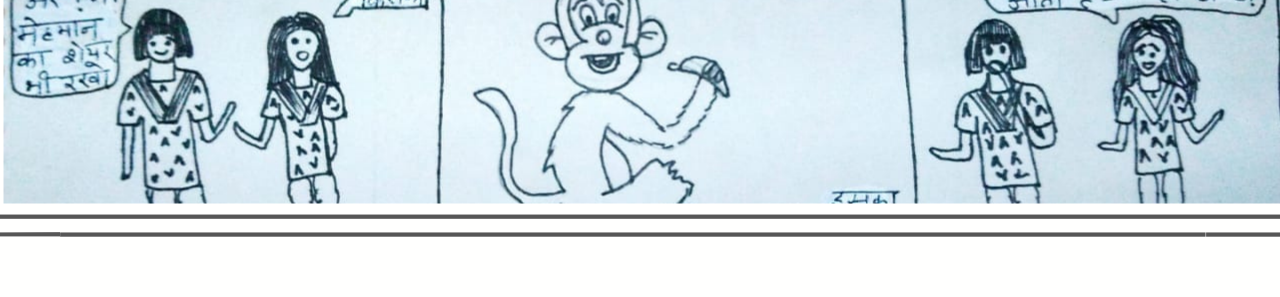

वैल्हमाइट्स का राशिफन

मेष राशि – अध्यापिका को आएगी तुम्हारे भोले मुख पर दया , करोगे हर काम नया ।
वृष राशि – बहुत से ख्याली पुलाव पकाओगे पर तीर कोई नहीं मार पाओगे ।
मिथुन राशि - खेल कूद से छिप कर भागने का करोगे प्रयास तो पकड़े जाओगे हर बार ।
कर्क राशि - डॉर्म से बाहर भी निकलो और उछलो कूदो । मुस्कुराओ कि तुम वैल्हम में हो।
सिंह राशि – नाक पर आखिर क्यों है बैठा गुस्सा , दिलों पर कर दो प्रेम की वर्षा ।
कन्या राशि - सुबह उठने से पहले और रात में सोने के बाद करो कोई काम! न रहेगा कोई मलाल ।
तुला राशि – सलवार कमीज को करो कम गंदा , मन रखो हमेशा चंगा ।
वृश्चिक राशि - दिखाओ नखरे खाने में कम,हँसो खेलों हर दम ।
धनु राशि - खेल कूद से छिप कर भागने का करोगे प्रयास तो पकड़े जाओगे हर बार ।
मकर राशि – मैट्रन को सताया करो कम, रोज मिलेगा तुमको उत्तपम ।
कुम्भ राशि – समय जाएगा तुम्हारा भयंकर , काम आएंगे सिर्फ जूनियर ।
मीन राशि – उठना पड़ेगा तुमको जल्दी , स्पोर्ट्स में भागना पड़ेगा जल्दी जल्दी ।

समाइरा भाटिया
कक्षा 8

हँसना ज़रूरी है

हाल ही में मैंने पंजाब की ठंड को पीछे छोड़ा, और हवाई जहाज पर सवार होकर गोआ के हसीन समुद्र तट पर पहुँच गई। वहाँ नीले आसमान के तले और हरे सागर की लहरों के साथ मैंने क्या दिन बिताए,वाह! पर जैसे ही मैंने सोचा कि पिछले साल का इससे सुंदर अंत हो ही नहीं सकता, एक आवाज मेरे कान में खुसफुसाई,“पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त।”नववर्ष की पूर्वसंध्या मनाने हम गोआ से वापिस पंजाब लौट रहे थे, जब हवाई अड्डे के पुराने फटे स्पीकर पर एक घोषणा हुई, “गोआ से आते हुए सभी यात्रियों को एक हफ्ते के लिए घर में संगरोध करना होगा।” यह सुनते ही मेरा चेहरा पीला पड़ गया, न्यू ईयर पार्टी की योजना पर पानी फिर चुका था।

आपने तो यह बात अवश्य सुनी होगी कि जो हम नए साल के पहले दिन करते हैं, वह ही हम बाक़ी के साल भी करते हैं। मैंने अपने फूटे भाग्य को स्वीकार कर लिया - शायद यह पूरा साल एकांत में चद्दर ओढ़े बीतेगा। कहाँ तो बारह बजे मैं पार्टी में जाकर नाचने वाली थी एवं वह लज़ीज़ खाना खाने वाली थी, जिसके बारे में सोचकर मेरे मुह में अभी भी पानी आ रहा है पर अब में अपनी चादर में बैठकर गोआ की तस्वीरें देखकर ग़म की गहराइयों में डूब रही थी।
अगले कुछ दिन भी ऐसे ही बीतें। ऑक्सीमीटर, थर्मोमीटर, काढ़ा - यही संगरोध के, और मेरी ज़िंदगी के तीन स्तम्भ बन गए। बोरियत जैसे लहरों में आ रही थी, घंटों मैं खिड़की के पास बैठे, शहर के स्वतंत्र नागरिकों को देखती, कमर में दर्द होने पर खटिया पर लेट जाती और पंखे को देखती। अब तो मुझे यह भी मालूम पड़ चुका था कि कमरे के पर्दे में १०७ फूल बने हैं और सोने से पहले भी मैं इतनी भेड़ियाँ देख लेती कि इतनी तो मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में ना देखी होंगी। अब तो मेरी भावनाएँ केवल एक ही चीज पर टिकी थी , मेरे लैपटॉप पर चलती हुई फिल्में। मैं ‘तारे जमीन पर’ के संग रोती और ‘फिर हेरा फेरी ’ के संग हँसती, इस कभी खुशी, कभी ग़म के चक्कर में मैं सचमुच गोलमाल हो चुकी थी।
बोरियत के इस मुकाम पर पहुँच गई थी, कि स्कूल का काम भी आनंदायक लगने लगा, छः महीने में पहली बार मैंने सारा गृह-कार्य खतम कर दिया था। दिन भर मैं सारा काम तमाम करती और रात को सपने में फिर गोआ पहुँच जाती। एक बार फिर ठंडी जमीन की जगह नरम रेत मेरे पैरों को पीछे छोड़ रही थी और मैं भाप की जगह समुद्र की गोद में दौड़ रही थी। बहुत समय बाद मुझे एक अनोखी भावना का एहसास हुआ - स्वतंत्रता।
अवनी जिंदल एवं हिमांशी गुप्ता
कक्षा 12

जारी रहेगा सफर...

सकारात्मकता से भरा हो हर वैल्हमाइट का जीवन : श्रीमती साम्बशिवम

मेरे लिए शिक्षा वह है जो व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकने में सक्षम हो।जैसा कि हमारे विद्यालय का भी आदर्शवाक्यहै-**आर्त शांतिफला विद्या**” विद्या वही है जो शांति दे। यदि मैं अपने समाज के लिए थोड़ा भी कुछ कर सकती हूँ तो मैं शिक्षित हूँ। एक शिक्षक कभी भी गलत बातों को प्रोत्साहित नहीं कर सकता, यही सोच कर मैंने भी शिक्षक होने की राह चुनी।यात्रा आसान नहीं थी पर जब आप शिक्षक होते हैं तो भावी युवाशक्ति के बीच रहते हैं, हमेशा आत्मविश्वास से भरपूर!जब मैं प्रधानाचार्या बनी तब मेरे समक्ष केवल एक ही लक्ष्य था कि मैं शिक्षा को तकनीकी से जोड़ सकूँ और छात्राओं को आने वाले तकनीकी युग से परिचित भी करवा सकूँ और सच कहूँ तो मैं इसमें अपने प्रिय साथियों के अथक प्रयास और सहयोग से सफल भी हो सकी ।

आज जाते- जाते मैं अपनी प्रिय छात्राओं से यही कहना चाहूँगी कि अपने जीवन में कभी भी नकारात्मक दृष्टिकोण न अपनाओ और सकारात्मकता से कठिन समय में भी न डगमगाओ।जीवनको आनंद के साथ जियो। अपने सपनों को साकार करो साथ ही देश के और समाज के लिए कुछ नया करने का प्रयास करो ।

शुभकामनाएँ!

छः साल का रिश्ता है,
अब जाने की बात न करो,
सब करते है प्यार आपसे,
अब छोड़कर जाने की बात न करो ।
पहले जब मैं माँ के साथ आती थी,
मैं घबराती थी पर
आप मुझे देख मुस्काती थीं ,
अब जब मैं आपको देख मुस्कुराती हूँ,
तो आप हमें छोड़ चली जा रही हैं।
ये आना- जाना महज एक भ्रम है,
दिल से दिल मिले तो न कोई गम है,
आपकी कही गई बातों को याद रखूंगी ,
यह वादा है।
फ़ख्र होगा आपको मुझपर ,
यह इरादा है।

आद्या
कक्षा 7

तू सब सहती है

क्यों तू चुपचाप रोती है ,
क्यों तू सब सहती है।
अपनी आवाज़ को डर के पल्लू के नीचे दबाती है
तू कोई अबला नारी नहीं, तू तो देवी का स्वरुप है।
ललकार उन सारे भेड़ियों को ,
जो तुझे मिट्टी समान रखते हैं।
याद दिला उनको कि वही मिट्टी उनके घरों की नींव है।
तुझसे ही जन्मा है रुतबा उनका
तो क्यों हिचकिचाती है करने में विनाश उनका।

तू भूल रही है तू नारी है ,
हर कदम में तेरे चिंगारी है।
अनकही कहानियाँ तेरी,
जो आँखों में छलकती तेरी
कहानियाँ जो तू सुनाने को बेताब है,
पर क्या करे कोई उन्हें बेताबी से सुनने वाला नहीं है
क्यों तू उस बेताबी को नादानी बोल के सहम जाती है ,
तू भूल रही है तू नारी है।

तेरी आवाज़ किसी की मोहताज नहीं.
जब-जब महिषासुर जैसे जन्म लेते रहेंगे ,
तब -तब तू दुनिया को एहसास दिलाती रहेगी
तू किसी के सामने झुकने वाली नहीं,
यह दुनिया भूल रही है तू नारी है।

मनस्वी पंत
कक्षा 12

चुनाव का भाव

आ गया है देश में चुनाव,
आएगा एक नया बहाव ।

बारी है अब करने की काम ,
अब क्या बन सकते हैं वे ईमानदार ?

या फिर रह जाएगा भारत का यही आकार।

राशन दे रही है सबको सरकार ,
पर क्या चावल में छुपा है कोई राज़।

क्या रखता है जनता का मत मायने आज ,
या खरीदा जा रहा है चुनाव चुपचाप।

सब एक छलावा है
जो दिखता है वो होता नहीं
और जो होता है वह दिखता नहीं ,

कब समझेगा यह हमारा प्यारा समाज।

खरीदने न दो उनको आपका विश्वास ,
आपके ही हाथों मे है अब भारत का चुनाव।।

मान्या गुप्ता
कक्षा 9

अनुष्का प्रकाश

अच्छा तो हम चलते हैं...

अपने होठों पर मुस्कान लिए यहाँ से विदा ले रही हूँ । वैल्हम जैसा कोई स्कूल नहीं है और यहाँ की जैसी प्यारी छात्राएं कहीं नहीं। तुम सब हमेशा यूँ ही चहकती रहो यही मेरी दुआ है।
"राजलक्ष्मी"

आज मैं जो भी हूँ वो वैल्हम की वजह से ही हूँ । यहाँ मैंने पिछली गलतियों से सीखा और भविष्य को सुन्दर बनाया है। ईश्वर का बेहद शुक्रिया कि मुझे यहाँ अपनी सेवाएं देने का मौका मिला। तुम सब सदा खुश रहो यही मनोकामना है।
"रोमा सकलानी "

आज यहाँ से जाते हुए मेरा मन बहुत भारी हो रहा है। यह दिन भी आएगा यह तो न सोचा था| तुम सब की एक -एक याद को संजोकर मैं जा रही हूँ। इन खट्टी-मीठी यादों को अपने मन में रख कर मैं आगे बढ़ती रहूंगी।
मेरी शुभकामनाएँ !
"सीमा इस्सर "

वेल्हम की हर छोटी से छोटी याद को अपने दिल में संजो कर जा रही हूँ। मुझे वेल्हम में आने वाले नए बच्चों की हमेशा प्रतीक्षा रहती थी उनका यहाँ आना और उनके साथ बातें साझा करना मैं सबसे ज्यादा याद करूँगी। मेरे प्यारे बच्चों को उनके उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएँ !
"मीना राजन"

प्रगति की राह पर

श्रीमती सुबोही राशिद
सीनियर स्कूल डीन

श्रीमती विभा कपूर
प्रधानाचार्या

श्रीमती अनुराधा बावा
ज़ूनियर स्कूल डीन

श्रीमती ममता गोविल
हाउस मिस्ट्रेस
सीनियर हूप्पु हाउस

श्रीमती अस्मिता
हाऊस मिस्ट्रेस
वुडपेकर हाउस

श्रीमती नीना अग्रवाल
इवेंट कोर्डिनेटर

श्रीमती अर्चना भट्ट
हाऊस मिस्ट्रेस
हुप्पु हाउस

आपकी पदोन्नति आपकी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। प्रगति की राह में एक कदम आगे बढ़ने के लिए आपको क्षितिज परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ !

वैल्हम के नए परिंदे

श्री विद्युत
कला विभाग

डॉ ऋतु पाठक
हिन्दी विभाग

मंजीत कौर
जीव विज्ञान

कंचन बडोला
गणित विभाग

ममता
पुस्तकालय

रितिका उनियाल
मनोविज्ञान विभाग

१२ इंच मुस्कान

एक ऑनलाइन समूह में नववर्ष के अवसर पर यह संदेश पाया गया-
हमारे समूह में कोई व्यक्ति है जो छह लोगों के लिए हेलीकॉप्टर की सवारी करना चाहता है ? हम अभी भी अपने साथ जुड़ने के लिए दो और लोगों की खोज कर रहे हैं। हम दिल्ली हवाई अड्डे से ३१ दिसंबर को सुबह छह बजे निकलेंगे, ऋषिकेश पहुँचकर नाश्ता करेंगे, फिर केम्प्टीफॉल कैंप में दोपहर का भोजन करेंगे, शाम को ३१ की रात पार्टी का आनंद लेने के लिए एक रिज़ॉर्ट में ठहरेंगे और १ जनवरी को यात्रा समाप्त करने के लिए वापस सफदरजंग हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरेंगे। अगर दिलचस्पी है, तो कृपया जल्द से जल्द संदेश भेजें!
नोट- दोनो बंदों में से किसी एक के पास हैलीकॉप्टर होना चाहिए अन्यथा यह उड़ान निरस्त।

सान्वी नंदी
कक्षा 7

घूमता आइना

यूक्रेन - रूस युद्ध

"क्या फायदा है सिर्फ हमलो की निंदा करके, कोई हुकूमत दिखाए मुर्दो को ज़िंदा करके।"

साल १९९७ में यूक्रेन ने अमेरिका, रूस तथा कई अन्य शक्तिशाली देशों के दबाव में आकर, अपने ss-24, ss-19, आदि मिसाइलों को नष्ट कर, अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली। तब यूक्रेन के तत्कालीन राष्ट्रपति, लियोनिद कुचमा थे। कुचमा के नेतृत्व में कई घोटालो का पर्दाफाश हुआ। यूक्रेन के सारे विस्फोटक नष्ट होने के बाद, लियोनिद ने अपने आप को बदनामी से बचाने के लिए, इस समाचार को अख़बार तथा दूरदर्शन पर प्रकाशित करने पर रोक लगा दी । इसी घटना के बाद, यूक्रेन की अधोगति आरंभ हुई। अगर उस समय, यूक्रेन ने अपने सभी विस्फोटक को विनष्ट नहीं किया होता, तो आज कदाचित, रूस के पास आक्रमण करने का साहस ही नहीं होता।

इस युद्ध का कागज़ी कारण तो तेल के कुएँ है, किन्तु इसकी एक और वजह यूक्रेन के नाटो संघ के सदस्य बनने की इच्छा भी हो सकती है। नाटो संघ के सदस्य देश, रूस से कन्नी काटते हैं। यदि यूक्रेन नाटो में शामिल हो जाता है, तो अधिकतर देश उसके पक्ष में हो जायेंगे,और फिर यूक्रेन को एक बार विश्व में श्रेष्ठतम देश बनने का मौका मिल सकता हैं। यूक्रेन एक स्वतन्त्र देश है, जो रूस अपने कब्ज़े में करना चाहता है । इस तरह रूस, यूक्रेन में अपने देश के आदमी को राष्ट्रपति के पद पर रखकर, यूक्रेन को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना चाहता हैं।

किन्तु इस स्थिति में यूक्रेन की जनता को बहुत संघर्ष करना पड़ रहा है। विदेश में अध्ययन करने के लिए, कई विद्यार्थी यूक्रेन गए थे। उनमें से कई भारतीय छात्र भी शामिल थे। भारतीय सरकार ने इन विद्यार्थियों को बचाने के लिए 'मिशन गंगा' अभियान आरंभ किया हैं। दुर्भाग्य से, इस मिशन को प्रारम्भ करने के बावजूद भी, एक भारतीय विद्यार्थी बमविस्फोटक का शिकार होही गया। एक ६० वर्षीय वृद्ध यूक्रेनी महिला ने अपना जन्मदिन, अपने घर के तहखाने में, अपने कुछ पड़ोसियों के साथ मनाया था। सारे पुरुषों और कई महिलाओं ने भी हथियार उठा लिए हैं। हाल ही में, एक वीर महिला ने एक रूसी टैंक के समक्ष खड़े होकर उसे रास्ता बदलने पर मजबूर कर दिया। यूक्रेन की जनता डरी हुई हैं परन्तु, वह अभी भी डटकर खड़ी हुई हैं। इस जंग को लगभग तीन महीने पूरे होने को आए हैं।

अंत में मैं यही कहूँगी कि, विवाद राष्ट्रों के बीच में होते है मगर, उसका भुगतान राष्ट्र की जनता को भुगतना होता है। इसीलिए हमें जंग को खत्म करना चाहिए और मिलकर भाईचारे के साथ रहना चाहिए क्योंकि युद्ध से किसी का भला नहीं होता।

आर्या शर्मा
कक्षा 7

डरना मना है!!!

दरवाज़े की खट खटाहट

यह कहानी सीधी-साधी नहीं है बड़ी मज़ेदार किस्म की है। एक रात की बात है। आसमान में था न कोई सितारा, न था चमकता हुआ चाँद। छात्रावास ही नहीं,आस-पास भी था गहरा सन्नाटा। कोई कोशिश भी करता तो तिनके तक के गिरने की आवाज़ न सुन पाता ।

छात्रावास की टिक-टिक करती घड़ी में रात के तीन बजे ही थे कि नैना उठ गई। उसने जल्दी से अपनी नीली-लाल चप्पलें पहनी और शौचालय की ओर चलने लगी और फिर अचानक से सुनाई दी उसे एक अजीब आवाज़ । यदि आप सोच रहे हैं कि जो आवाज़ उसने सुनी वह किसी आदमी या औरत की थी तो आप बिल्कुल गलत हैं। उसने सुनी थी दरवाज़े को खटखटाने की आवाज़ ।अब जैसे ही नैना के कदम रुके वैसे ही आवाज़ भी रुकी। उसने अपने कदम भी तेज़ किए पर खटखटाने की वह आवाज़ और तेज गूँजने लगी। नैना की रूह काँपने लगी। माथे से पसीना टपकने लगा। बेहद डरी हुई वह किवाड़ की ओर गई और हिम्मत करके उसकी छोटी बंद कुण्डी खोलने लगी कि लगा उसे एक जोरदार धक्का। नैना की बड़ी - बड़ी और सूजी हुई आँखें बहुत गहरी नींद से खुली। उसका छोटा सा दिमाग अब भी अपने उस स्वप्न के बारे में सोच रहा था। सोचते हुए जैसे ही नैना नींद से उठी ,हिलती -डुलती अपने कमरे के दरवाज़े की ओर जा रही थी। उसी पल उसे आवाज आयी " नैना मुझे तुम्हारा दरवाज़े के पीछे हमेशा इंतज़ार रहेगा। "

मीनल गोयल
कक्षा 11

क्या है यह डर?

क्या है यह डर?
जो है सोने से रोके,
ऊँचाइयों को छूने से टोके
क्या डर वो परछाई है,
जो बिस्तर के नीचे है ,
या वो जो मेरे सपनो में है ।
डर-डर के जीना है गलत,
यह सभी को डर ही सिखाए ,
क्या है कोई सच में निडर?
या है ढोंग जगत का?
क्या है यह डर?
कोई तो बताए ,
कोई तो इन्हे समझाए
डरते है जो छोटे जीवों से
या अपनी ही जाति से ।
डर और भय नाम अनेक,
रहता हैं बच्चों में एक समय
डरते माँ की हथेली से कोई
तो कोई पिता की आवाज से ।
डालते है सारा इलज़ाम भय पे,
परंतु भूल नहीं ऐ मनुष्य
तूने ही बनाया है यह भय।
तो मत कह
तू डर गया, तू सहम गया।
चढ़ जा उस चोटी पर
और जीत यह संसार
आखिर क्या है यह डर?

प्रानग्या सिंह
कक्षा 9

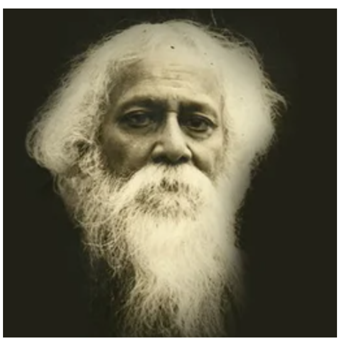

पुण्य स्मरण

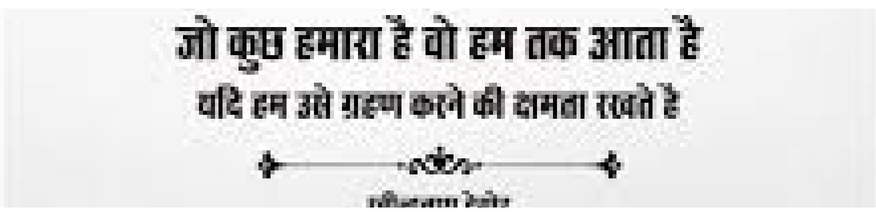

भाषा का पन्ना

शब्दहार : नव (नया)

बहुत बड़ा और विस्तृत है 'नव' शब्द का संसार, नव के कई अर्थ होते हैं और इससे बनते हैं कई शब्द। नव शब्द में नवीनता का भाव है, नूतनता की सुगंध है। इसलिए नववर्ष में उत्साह है, उल्लास है, उमंग है। यही वह पावन समय है जब फाग के रंगों में सराबोर होने के बाद प्रकृति भी **नवभूषण** धारण कर **नवोढ़ा** हो जाती है। । नव नूतन भी है और संख्या भी। पहले बात नूतन वाले नव की ,जिस माता ने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया है, वह **नवप्रसूता** हैं, और उनका शिशु है **नवजात**। नया अन्न **नवान्न** कहलाता है। नौजवान पुरुष है तो **नवयुवक** और स्त्री है तो **नवयुवती**। नित्य नए रंग में रंगा रहने वाला **नवरंगी** है। ताज़ा मक्खन **नवनीत** है। पहली वर्षा का जल **नवोदक** है । किसी द्रुम पर नया पत्ता खिल आया हो तो वह **नवदल** है। दूज के चंद्रमा को कहते हैं **नवशशि**। नया-नया या हाल में आया हुआ **नवागत** है।

नव का एक अर्थ संख्या वाला ‘नौ' भी होता है। लगे हाथ उसका चमत्कार भी देख लेते हैं।

नव होता है नौ, नब्बे की संख्या को कहते हैं **नवति** और नब्बे में एक कम होता है **नवासी**। नवरात्र में पूजी जाने वाली **नवदुर्गा** के नाम से तो आप परिचित हैं । **नवग्रहों** की संख्या भी नौ मानी गई है । साहित्य में नौ प्रकार के रस **नवरस** कहलाते हैं।

तो यह है नव शब्द का हार ।॥ शेष अगले अंक में !!

वर्ग पहेली

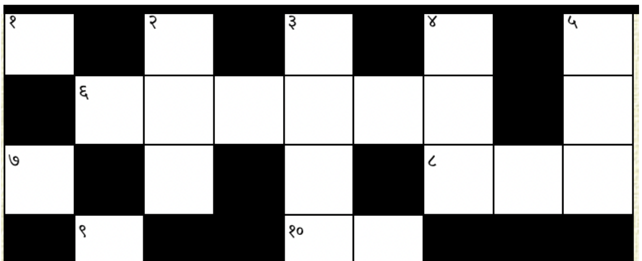

बाएँ से दाएँ

१. लक्ष्मी

६. दीपावली के बाद ‘अन्नकूट' के अवसर पर की जाने वाली एक पूजा, जो गोधन को समर्पित है।

७. देवी के लिये प्रयुक्त शब्द, माता।

८. पूजा सामग्रियों में से एक, पान।

१०. विष्णु पत्नी लक्ष्मी का एक नाम यह भी है।

११. दीपावली के एक दिन पूर्व मनाये जाने वाले पर्व का एक नाम, जिसे छोटी दिवाली भी कहते हैं।

१५. दीपावली से पूर्व मनाया जाने वाले पर्व, रावण के संहार का दिन।

१६. दिवाली की मुख्य और धन धान्य की देवी की पूजा।

१८. रंगोली का राजस्थानी नाम।

१९. ज्ञान की देवी।

ऊपर से नीचे

२. दीपस्तम्भ, दीपाधार

३. दीवाली के दो दिन पूर्व मनाया जाने वाला त्योहार, जिसमें नये बरतन, आभूषण आदि कुछ न कुछ नया खरीदने की परिपाटी है।

४. देवी लक्ष्मी का एक नाम।

५. इस राज्य में लक्ष्मी के ‘काली' रूप की पूजा होती है।

९. दीया, दीपक

१२. रंगोली बनाना।

१३. रावण

१४. अयोध्या के राजा जिनके आगमन पर दीपावली महोत्सव मनाने की प्रथा है।

१७. देव वास्तुकार विश्वकर्मा का पुत्र जिसने लंका विजय के लिए समुद्र में रामसेतु बनाने में प्रमुख भूमिका निभायी थी।

उत्तर अगले अंक में

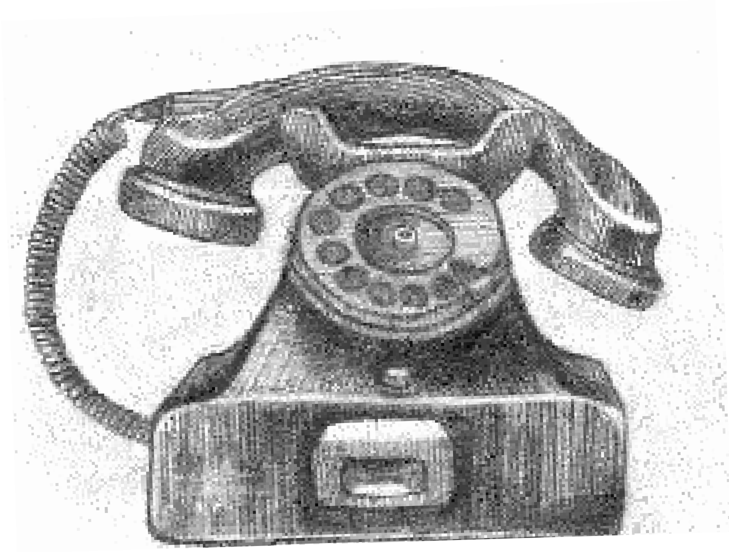

टेलीफ़ोन

टेबल पर है पड़ा हुआ ,
दो तारों से जुड़ा हुआ।
सर है अलग ,
अलग है धड़।
चाहे दिल्ली हो या पूना ,
दूर-दूर से इसका नाता
चाहे जिससे बात करता।
अंक डालो तो,
ट्रिंग - ट्रिंग करता।
बोलो वेल्हमाइट ये है कौन?
यह हमारा टेलीफ़ोन

साँची मालपानी
कक्षा 7

अनंत है तेरी माया

- **शत्रु**- जो आपकी पोस्ट पर मन मुताबिक़ प्रतिक्रिया न दे वह आपका शत्रु है।
- **धनी**- जिसके जितने फॉलोअर्स, वह उतना ही धनी है।
- **निर्धन-** इस आभासी संसार में फॉलोअर्स रहित मनुष्य निर्धन है।
- **ज्ञानी**- सोशल मीडिया के सभी संसाधनों के प्रयोग का ज्ञाता, फॉलोअर्स बनाने की कला में दक्ष, कम संसाधनों में भी अच्छी सेल्फी लेने में सिद्धहस्त ही ज्ञानी है।
- **अज्ञानी**-जो आज के समय में भी सोशल मीडिया का उपयोग करना नहीं जानता वही अज्ञानी है।
- **विद्या**- हर वो गुण, कला जिसका प्रदर्शन सोशल मीडिया पर हो सकता वह विद्या है।

वान्या गुप्ता
कक्षा 7

प्रार्थना और एकजुटता का संदेश

किसी को ऑक्सीजन की जरूरत थी,
किसी ने संदेश भेजा ।
किसी ने पढ़ा तो किसी ने उसे आगे बढ़ाया।
किसी ने फोन लगाया तो किसी ने जवाब दिया।
किसी ने सिलेंडर उठवाया किसी ने भरवाया तो किसी ने उसे भिजवाया।
और फिर किसी की जान बच गयी ।
सब कुछ 'किसी की' 'किसी' और की मदद करने की पहल के चलते हुआ ।
कितने सारे अनजाने लोग जुटे थे इस कठिन दौर में ।
हर 'किसी' को हर 'किसी' की ओर से शुक्रिया !

क्षितिज परिवार

- **प्रभारी शिक्षिका - डॉ ऋतु पाठक**
- **मुख्य सम्पादिका - मनस्वी पंत**
- **सहायक मण्डल:**
- देविका अग्रवाल
- अनन्या गुप्ता
- नविका जिंदल
- वान्या गुप्ता
- आद्या
- साँची मालपानी

मुख्य चित्रकार: अनन्या गुप्ता

चित्रकार:

- आरिया गर्ग
- अनुष्का प्रकाश
- आशी ढंढारिया
- अन्वेषा शर्मा
- सिद्धि अग्रवाल
- वैष्णवी अग्रवाल

विशेष आभार
श्रीमती अस्मिता